माँ

अंजना जुयाल
सर्किट हाउस पौडी
anjanajuyal07@gmail.com

माँ दुनिया में परमात्मा का रूप है.
सम्पूर्ण सृष्टि में दूसरा न ऐसा स्वरूप है..
माँ का दूध अमृत के समान है.
माँ का सम्पूर्ण जीवन महान है..
माँ की गोद आलीशान भवन है.
माँ का आँचल विस्तृत गगन है..
माँ नदिया की धारा है. माँ सागर की गहराई है.
माँ बगिया है, उपवन है.
माँ सघन अमराई है..
माँ आंगन है, सीढ़ी है छत है.
माँ घाटी है,मैदान है, पर्वत है..
माँ छाया है, धूप है, फुहार है
माँ नैया है, माँझी है पतवार है..
माँ वेद है, पुराण है, गीता है.
माँ दुर्गा है, यशोदा है, सीता है..
माँ निज जीवन में मरुस्थल की तपती रेती है.
माँ सन्तान के लिये लहलहाती खेती है..
माँ तो माँ है इसका कोई विकल्प नहीं.
माँ की सेवा से बड़ा संसार मे कोई संकल्प नहीं...

ईजा

ईजा मैंके आज नानछनाक बखत याद आगो
तु कतुक भलि छै मैंके आज पत्त चलि गै
त्यर प्यार लै ईजा सार लोक है अलगै छु.
यमै तो सार दुणियक सुख लुकी छु.
मैंकै आज उ बखत-दिन याद आ गई.
त्यार प्यार कैं आज मैं आपण क्वाठौंन ला गईं.
त्यार नड़क धड़क में तो रीस औंछी.
पर त्यार लाड़-प्यार में तो तीनों लोक देखिंछी.
दिन भर डोवी बेर जब घरौं औंछीयां.
भितेर खुट धरतेहि आम-बुबुकि नड़क खांछियां.
पर त्यार दुदेकी घुटुक ल्ही बेर.
तीनै लोकोंक सुख पांछियां.
यक्कै हमै नै भगवान लै त्यार आभारी छन्.
त्यार कोख बटिक जनम् ल्ही बेर.
उ बाड़-बाड़ अत्याचारियोंक् नास करणी छन्.

— कृष्ण तिवारी
krishnatewari8@gmail.com